संपादक का नोट

मेरे सभी प्रिय भाइयों, बहनों और मसीह यीशु में बच्चों के लिए सबसे परमप्रधान के नाम से अभिवादन करती हूँ। मुझे उम्मीद है कि सभी ठीक हैं और इस संकट की स्थिति में सुरक्षित हैं जिसका सामना पूरी दुनिया कर रही है। मैं आग्रहपूर्वक से प्रार्थना करती हूँ कि हमारे अच्छे पिता आप में से प्रत्येक को मसीह यीशु के पवित्र लहू से छुपाये रखे।

जकर्याह 2: 5 ''यहोवा की यह वाणी है, कि मैं आप उसके चारों ओर आग की सी शहरपनाह ठहरूँगा, और उसके बीच में तेजोमय होकर दिखाई दूँगा।''

हमारे प्रभु कहते हैं कि वह स्वयं ही हमारे परीक्षणों और क्लेशों के बीच में महिमा होंगे। जब हम अपना विश्वास और भरोसा प्रभु में रखते हैं, तो वह हमें अपनी कृपा प्रदान करेंगे और हम पर अपनी कृपा बरसाएंगे। लेकिन जब हम उस पर विश्वास नहीं करते हैं, तो वह हमारे जीवन में काम नहीं कर सकते है। एक खेत में, किसान केवल बीज बो सकता है, लेकिन अगर भूमि उपजाऊ नहीं है, तो वह कैसे फल देगी? इसी तरह, जब हम परमेश्वर पर अपना विश्वास रखेंगे, तो हम अपने जीवन में उनके आशीर्वाद का अनुभव करेंगे। लेकिन अगर हम उस पर विश्वास नहीं करते हैं, तो प्रभु हमें कैसे आशिष दे सकते है? यह किसान और खेत के बीच एक सहमति है, जिसमें किसान बोता है और फिर खेत फल देता है। हमारे जीवन में भी, प्रभु और हमारे बीच एक सहमति है; यदि हम उनके साथ बंधे रहते हैं, तो हम फल प्राप्त करेंगे और आशिष प्राप्त करेंगे।

रोमियों 4:21 ''और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है।''

जब परमेश्वर हमारे साथ एक सहमति करते है, तो वह हमारे जीवन में उसी को पूरा करने की सामर्थ भी रखते है। वह झूठे नहीं है और हमसे दूर नहीं भागेंगे। यदि प्रभु को भागना ही होता, तो वह हमारे लिए क्रूस पर अपने जीवन का बलिदान नहीं देते। उन्होंने हमें जो भी वचन दिया है, वह एक ही परमेश्वर है जो उसे पूरा करेंगे। रोमियों 3:22 ''अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है। क्योंकि कुछ भेद नहीं;'' उन सभी के लिए जो प्रभु पर विश्वास करते हैं, कोई अंतर नहीं है; प्रभु उनके हर वादे को पूरा करेंगे, बशर्ते कि हम केवल विश्वास करें। जब यीशु इस दुनिया में थे, उन्होंने भी ऐसा ही किया; जो कोई भी उनके पास आएं, उन्होंने पूछा क्या तुम विश्वास करते हो? अगर

हाँ, तो ठीक हो जाओ। यदि हमें प्रभु पर भरोसा नहीं है, तो हमें दिए गए वादे पूरे नहीं किए जा सकते – वे निरर्थक होंगे। इसलिए, हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि विश्वास में ही हम धन्य हो सकते हैं।

मत्ती 6:33 ''इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।'' वचन के अनुसार, हमें सबसे पहले अपने प्रभु का अनुसरण करना चाहिए, उनके हाथों में सब कुछ दे देना चाहिए, और उसके बाद ही वह हमें आशिष देंगे। हममें से कई लोग यह विश्वास किए बिना प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवन में काम कर सकते है। ऐसी प्रार्थना से कुछ नहीं होता। लेकिन जब हम अपने परमेश्वर में विश्वास करते हैं, परमेश्वर को पुरे मन से स्वीकार करते हैं, उन पर अपना भरोसा रखते हैं और यह स्वीकार करते हैं कि केवल वह ही हमारे जीवन में चमत्कार कर सकते है, तब कुछ मिनटों की मौन प्रार्थना भी परमेश्वर द्वारा सुनी जाएगी। उन लोगों के लिए जो मानते हैं कि प्रभु जीवित है और वह हमारी प्रार्थनाओं को सुनते है, उनके लिए वह तुरंत प्रार्थनाओं का जवाब देंगे। प्रभु हमसे हृदयपूर्वक प्रार्थना चाहते हैः हम किसी भी जगह, किसी भी भाषा और किसी भी स्थिति में प्रार्थना करे; वह हमें सुनेंगे और जवाब देंगे। हमारे लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि हमारा परमेश्वर हमारे लिए क्या कर सकते है।

यह विश्वास करना महत्वपूर्ण है कि हमारे प्रभु हमारे लिए कुछ भी और सब कुछ कर सकते हैं, लेकिन हमें विश्वास में पूछना चाहिए और भरोसा करना चाहिए कि वह हमें आशिष देंगे। फिलिप्पियों 4: 6–7 ''6 किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। 7 तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।''

हाँ, हमारे परमेश्वर हमें हमारे सभी परीक्षणों और क्लेशों से और हमारे दुख और दर्द से बाहर निकाल देंगे, बशर्ते कि हम उस पर विश्वास करें। जैसा कि हम पूरे महीने काम करने के बाद अपनी तनख़्वाह का इंतजार करते हैं, हमें अपने आशिष के लिए भी प्रभु पर इंतजार करना चाहिए। प्रतीक्षा की अवधि के दौरान हमें प्रभु के खिलाफ नहीं बोलना चाहिए या किसी भी प्रकार का अविश्वास नहीं दिखाना चाहिए। कभी–कभी जब कोई इंसान हमारी मदद करता है, तो उसके पास हमें हमेशा के लिए आशिष देने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है। मनुष्य के विपरीत, प्रभु के पास हमारे लिए आशिष का खज़ाना है। प्रभु हमें आज या कल उनकी इच्छा के अनुसार आशिष देंगे, लेकिन आशिष निश्चित रूप से समय के अनुसार आएगा।

विश्वास बनाए रखें और हमारे सर्वशक्तिशाली प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह से प्रार्थना करते रहिए और वह आपको अनुग्रह, दया और बहुतायत से आशिष प्रदान करेंगे। हम फिर से मिलें तब तक,

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

परमेश्वर पर भरोसा रखो – वह आपको आशिष देना चाहते है।

दानिय्येल 4: 32 ''और तू मनुष्यों के बीच में से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; और बैलों की नाईं घास चरेगा और सात काल तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि परमप्रधान, मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहे वह उसे दे देता है।'' विश्व इतिहास से पता चलता है कि जब इस दुनिया में मानव जाति बढ़ी, तो लोगों ने उन पर शासन करने के लिए नेताओं को चुना। आज भी, नेताओं को चुनने के लिए चुनाव प्रक्रिया होती है और लोग इस चुनावी प्रणाली का उपयोग करते हैं। एक बार नेताओं को चुने जाने के बाद उन्हें भूमि के कानून के अनुसार शासन करने की शक्तियां दी जाती हैं। लेकिन, हमें यह भी पता होना चाहिए कि हमारे नेता हमारे द्वारा चुने जा सकते हैं लेकिन वे निश्चित रूप से प्रभु की इच्छा के अनुसार चुने जाते हैं। जैसा कि हम पढ़ते हैं 1 शमूएल 2: 7–8 ''7 यहोवा निर्धन करता है और धनी भी बनाता है, वही नीचा करता और ऊंचा भी करता है। 8 वह कंगाल को धूलि में से उठाता; और दरिद्र को घूरे में से निकाल खड़ा करता है, ताकि उन को अधिपतियों के संग बिठाए, और महिमायुक्त सिंहासन के अधिकारी बनाए। क्योंकि पृथ्वी के खम्भे यहोवा के हैं, और उसने उन पर जगत को धरा है।'' इसी तरह, हम जानते हैं कि राजा शाऊल को इस्राएलियों ने उन पर शासन करने के लिए चुना था। लेकिन एक समय ऐसा भी आया जब प्रभु का हाथ उस पर पड़ा और उसके पद पर किसी और को बदलने का समय आ गया। परमेश्वर ने राजा शाऊल की जगह ले ली और दाऊद जो की एक चरवाहा था उसको इस्राएल का राजा बना दिया। इसलिए, इस दुनिया का शासक न तो शैतान है और न ही लोगों का नेता है, बल्कि यह हमारे प्रभु परमेश्वर हैं जो दुनिया पर राज करते हैं और हमें शासन करते हैं। राजा नबूकदनेस्सर को परमेश्वर के अधिकार का एहसास करने में सात साल लगे। आइए हम पढ़ते हैं दानिय्येल 4: 25–30 ''25 कि तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; तू बैलों की नाईं घास चरेगा और आकाश की ओस से भीगा करेगा; और सात युग तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है। 26 और उस वृक्ष के ठूंठ को जड़ समेत छोड़ने की आज्ञा जो हुई है, इसका अर्थ यह है कि तेरा राज्य तेरे लिये बना रहेगा; और जब तू जान लेगा कि जगत का प्रभु स्वर्ग ही में है, तब तू फिर से राज्य करने पाएगा। 27 इस कारण, हे राजा, मेरी यह सम्मति स्वीकार कर, कि यदि तू पाप छोड़ कर धर्म करने लगे, और अधर्म छोड़ कर दीन–हीनों पर दया करने लगे, तो सम्भव है कि ऐसा करने से तेरा चैन बना रहे। 28 यह सब कुछ नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया। 29 बारह महीने बीतने पर जब वह बाबुल के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा, 30 क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने

प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है?'' नबूकदनेस्सर के मन में गर्व था कि उसने जो कुछ भी बनाया था वह अकेले उसके द्वारा बनाया गया था। इस विचार के साथ, वह बिस्तर पर सेवानिवृत्त हो गया। यह उस समय था जो कि उसने सपने में एक भयानक सपना देखा। प्रभु ने उसे सपने में उसके पतन के बारे में पूर्व से ही दिखा रखा था इस प्रकार नबूकदनेस्सर चिंतित और भयभीत था। उसने अपने सपने की व्याख्या करने के लिए बुद्धिमान दानिय्येल को बुलाया। आइए हम पढ़ें दानिय्येल 2: 38 – 40 ''38 और जहां कहीं मनुष्य पाए जाते हैं, वहां उसने उन सभों को, और मैदान के जीवजन्तु, और आकाश के पक्षी भी तेरे वश में कर दिए हैं; और तुझ को उन सब का अधिकारी ठहराया है। यह सोने का सिर तू ही है। 39 तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा; फिर एक और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा जिस में सारी पृथ्वी आ जाएगी। 40 और चौथा राज्य लोहे के तुल्य मजबूत होगा; लोहे से तो सब वस्तुएं चूर चूर हो जाती और पिस जाती हैं; इसलिये जिस भांति लोहे से वे सब कुचली जाती हैं, उसी भांति, उस चौथे राज्य से सब कुछ चूर चूर हो कर पिस जाएगा।'' वचन 42 कहता है ''42 और जैसे पांवों की उंगलियां कुछ तो लोहे की और कुछ मिट्टी की थीं, इसका अर्थ यह है, कि वह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल होगा।'' जब नबूकदनेस्सर ने यह सपना देखा तो वह बहुत भयभीत और चिंतित था। दानिय्येल 2: 34–35 कहता है ''34 फिर देखते देखते, तू ने क्या देखा, कि एक पत्थर ने, बिना किसी के खोदे, आप ही आप उखड़ कर उस मूर्ति के पांवों पर लगकर जो लोहे और मिट्टी के थे, उन को चूर चूर कर डाला। 35 तब लोहा, मिट्टी, पीतल, चान्दी और सोना भी सब चूर चूर हो गए, और धूपकाल में खलिहानों के भूसे की नाईं हवा से ऐसे उड़ गए कि उनका कहीं पता न रहा; और वह पत्थर जो मूर्ति पर लगा था, वह बड़ा पहाड़ बन कर सारी पृथ्वी में फैल गया।'' हम ऊपर के वचनों में देखते हैं कि मूर्ति लोहे और मिट्टी से बनी थी, इस तरह की एक मजबूत संरचना जमीन पर धँसी हुई थी। एक विशाल पत्थर कहीं से लुढ़का और उस मूर्ति को नष्ट कर दिया। फिर एक शक्तिशाली हवा ऊपर से प्रभु द्वारा भेजी गई थी, यहां तक कि अवशेष पूरी तरह से बंद थे। यह पत्थर क्या था? यह पत्थर मानव निर्मित पत्थर नहीं था, बल्कि इसे प्रभु ने भेजा था – हमारा प्रभु एक कोने का पत्थर है। यीशु मसीह को स्वर्ग से प्रभु परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। हालाँकि यीशु इस दुनिया में पैदा हुए थे, वह सीधे स्वर्ग से परमेश्वर द्वारा भेजे गए थे। यीशु मसीह इस दुनिया का कोने का पत्थर हैं। नबी दानिय्येल ने यह बताया है दानिय्येल 2: 44 ''और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूर चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा।'' यह पत्थर स्वर्ग से भेजे गए प्रभु यानी यीशु मसीह थे। उन्हें इस दुनिया की बीमारियों को नष्ट करने के लिए भेजा गया था और यह सुनिश्चित किया गया था कि प्रभु का शासन अनंत से अनंत काल तक रहेगा। इस प्रकार, हालांकि इस दुनिया के लोग इस देश के शीर्ष पर नेताओं को स्थापित करने की कोशिश करेंगे, फिर भी यह केवल प्रभु है जो उन्हें हमारे ऊपर शासन करने के लिए चुनते है। यह सच है, मानव जाति की शुरुआत से यह चला आ रहा है। हम जानते हैं कि नबूकदनेस्सर के दिल में बहुत गर्व था कि उसने अपना साम्राज्य बनाया था, और उसी सोच के साथ सो गया, जब प्रभु ने उसे एक भयानक सपने से जगाया। प्रभु ने उसे सपने में बहुत स्पष्ट रूप से दिखाया था कि वह कैसे गिर जाएगा, उसका राज्य कैसे विनाश जाएगा और वह नष्ट हो जाएगा। नबी दानिय्येल ने सपने को स्पष्ट रूप से राजा नबूकदनेस्सर को समझाया। मूर्ति लोहे और मिट्टी से बनी थी, लेकिन प्रभु ने इस विशाल मूर्ति को नष्ट करने के लिए स्वर्ग से एक विशालकाय पत्थर भेजा और

उसे चकनाचूर कर दिया। उसके बाद अवशेषों और खंडहरों को मिटाने के लिए एक महान हवा भी भेजी गई, ताकि आसपास किसी भी मूर्ति के अवशेषों के निशान न हों। ऐसे ही नबूकदनेस्सर पर प्रभु का गुस्सा था। हमारे प्रभु परमेश्वर मानव निर्मित नहीं हैं या किसी भी आदमी द्वारा चुने नहीं गए हैं, यीशु मसीह को पिता परमेश्वर ने स्वर्ग से हमारे लिए भेजा था।

मत्ती 21: 42–44 ''42 यीशु ने उन से कहा, क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया? 43 यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारे देखने में अद्भुत है, इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा। 44 जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगाः और जिस पर वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा।'' इस प्रकार, हालांकि बहुत से लोग नेता के रूप में अपने नामांकन के लिए चुनाव लड़ते हैं, यह प्रभु की योजना है कि वे सत्ता में आते हैं। परमेश्वर केवल उन्हें ही चुनेंगे जिन्हे वह जानते है कि वह भयरूप से और सही ह्रदय से शासन करेगा। हम जानते हैं कि यीशु मसीह आत्मा से पैदा हुए थे, मनुष्य की इच्छा से नहीं। यीशु मसीह इस धरती पर हमारे लिए पिता परमेश्वर का उपहार है। आइए हम पढ़ते हैं दानिय्येल 7: 27 ''तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करने वाले उसके आधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।'' यह भविष्यवाणी अंत समय के लिए लिखी गई थी। हालाँकि इस दुनिया के बहुत से लोग नेताओं को नामित करना चाहते हैं, हमें याद रखना चाहिए कि नेताओं को केवल प्रभु की इच्छा से चुना जाता है और अकेले उनके ही योजना होती है। अंत में, प्रभु इस दुनिया में सभी को अपने नियंत्रण में लाएंगे। आज विपक्षी दलों, सत्ताधारी विपक्षी दलों में कई तरह के झगड़े हो रहे हैं। लेकिन यह सब व्यर्थ है, क्योंकि यह दुनिया अकेले प्रभु की है। यह केवल एक निश्चित समय के लिए है कि प्रभु ने शासकों को इस दुनिया में शासन करने की अनुमति दी है। परमेश्वर अपने लोगों से प्यार करते है और उसका मन उन पर टिका हुआ है। समय–समय पर, वह हमारे अकेले अच्छे के लिए शासकों को बदल देगा। यह उस धर्मी के लिए है जो उससे प्रेम करते है, परमेश्वर वर्षा उसके मौसम में भेजते है। इस प्रकार, धर्मी के साथ–साथ अधर्मी भी धन्य होते हैं। इस धरती पर कई धर्मी हैं। एक परिवार में भी, यदि किसी को उद्धार का उपहार मिला है, तो पूरा परिवार बच जाएगा और धन्य हो जाएगा। इस दुनिया में भी प्रभु के उपदेशक, प्रचारक, याजक, भविष्यद्वक्ता और सेवक हैं, क्योंकि इस दुनिया में भी प्रभु की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त होते हैं, इस प्रकार दुनिया में रहने के लिए एक सुरक्षित स्थान बन जाता है।

प्रकाशितवाक्य 11: 15 ''और जब सातवें दूत ने तुरही फूंकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े बड़े शब्द होने लगे कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया।'' बुद्धि, शक्ति और महिमा अकेले प्रभु की है। अगर हम इस सच्चाई को छोड़ देंगे और शत्रु के चंगुल में पड़ जायेंगे, तो हमारा जीवन नष्ट हो जाएगा। आइए हम यह भी पढ़ें यशायाह 26: 3 ''जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।'' हमें अपना विश्वास और भरोसा प्रभु पर रखना चाहिए जो की इस पृथ्वी पर हमेशा और हमेशा के लिए राज करने वाले है। हम इस दुनिया में शांति से रहेंगे। यदि हम अपना विश्वास और भरोसा मनुष्यों पर रखते हैं, तो हम अपनी शांति खो देंगे, क्योंकि एक नेता आज है और कल नहीं। इसलिए, हमारे विश्वास को प्रभु में ही रहने दें। हमारे प्रभु सभी राजाओं के राजा से और

देवताओं के देवता से ऊँचे प्रभु है। धरती के नष्ट होने के बाद वह हमारे लिए एक शानदार दुनिया तैयार कर रहे है जिसमे हम रह सकें। तो हमारे मन को अकेले प्रभु पर रहने दो, हमें पूर्ण शांति होगी और इस दुनिया में कुछ भी घटी न होगी। लोग समय–समय पर बदलते हैं और समय–समय पर शासन भी करते हैं। यह अकेले प्रभु है जो उन्हें स्थापित करते है, प्रभु जब चाहे उन्हें निकाल देंगे। अंत में, यह हमारे राजा के राजा , यीशु मसीह है जो अकेले ही इस पृथ्वी पर राज्य करेंगे। वह आज भी हमारे बीच में है। एक बार फिर अगर हम राजा नबूकदनेस्सर के जीवन को देखते हैं, तो वह एक महान राजा था, लेकिन जब अभिमान उस में प्रवेश किया, तो उसने आदेश दिया कि एक विशाल मूर्ति उसकी बनाई जाए और इस्राएल में लोग उसकी पूजा करें। लेकिन हमने यह भी देखा है कि जब प्रभु ने एक विशाल पत्थर को नष्ट करने के लिए भेजा तो विशाल प्रतिमा कैसे ढह गई, यहां तक कि इसके अवशेष भी नहीं मिले, धूल भी उड़ती हवा में गायब हो गई। इसी तरह इस दुनिया में भी, सभी कानूनों को समाप्त होना होगा। राजा और शासक भी मर जाएंगे और उन्हें किसी दिन मिट्टी में दफन कर दिया जाएगा। और उसके बाद हमारे धर्मी मनुष्यों के लिए एक और मृत्यु है, हमारे प्रभु यीशु मसीह जो हमें बचाने के लिए इस दुनिया में भेजे गए थे, हम पर शासन करेंगे। यदि हमारा विश्वास और भरोसा अकेले उन पर है, तो हम शांति से रहेंगे। भजन संहिता 144 : 13 ''जब हमारे खत्ते भरे रहें, और उन में भांति भांति का अन्न धरा जाए, और हमारी भेड़– बकरियां हमारे मैदानों में हजारों हजार बच्चे जनें।'' हमारे प्रभु परमेश्वर अपने लोगों को बहुतायत से आशीर्वाद देते हैं, प्रभु जब हमारे भंडारघर को भर देते हैं तो हमें कभी भी किसी भी चीज़ की कमी नहीं होती। प्रभु अपने लोगों को आशीर्वाद देने, हमें बंधन से मुक्त करने, हमें हमारे पापों से मुक्ति दिलाने, टूटे हुए हृदय को ठीक करने, लोगों को अंधकार से मुक्त करने और उन्हें प्रकाश में लाने के लिए आए हैं। इसलिए, प्रभु ने अलग–अलग लोगों को अलग–अलग तरह से आशीर्वाद दिया है, उन्होंने लोगों को अलग–अलग तरीकों से ठीक किया है। वह धर्मी को आशीर्वाद देते है और उनके भंडारघर को और घरों को भी भर देते है।

इस दुनिया में विभिन्न धर्म हैं जैसे .. मुस्लिम, हिंदू, क्रिस्ती आदि। किसी भी धर्म में हमने यह नहीं देखा है कि उनके ईश्वर ने उनके लिए अपना जीवन दिया है। लेकिन, सच्चाई यह है कि, प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए अपना जीवन दिया है। जो उनके लहू से धोए और खरीदे गए, प्रभु के लिए उनका प्यार जानते हैं। इस प्रकार, यह महत्वपूर्ण है कि प्रभु का प्यार हमारे दिलों में भी राज करता है। जब हम इस सच्चाई को जानते हैं और अपने जीवन में इसका अनुकरण करते हैं, तो हमारे पास किसी भी चीज़ की कमी नहीं होगी। हमें बड़े उत्तेजकता और उत्साह के साथ रहना चाहिए। हमारा प्रभु वही है न बदलनेवाला परमेश्वर, चाहे तो हम प्रभु का त्याग कर सकते हैं और प्रभु और हमारे बीच के विश्वास को तोड़ सकते हैं। लेकिन याद रखें, प्रभु कभी नहीं बदलते है, वह कल, आज और हमेशा के लिए एक ही है। आइए हम फिर से पढ़ें भजन संहिता 144: 13 ''जब हमारे खत्ते भरे रहें, और उन में भांति भांति का अन्न धरा जाए, और हमारी भेड़– बकरियां हमारे मैदानों में हजारों हजार बच्चे जनें।'' हम धन्य हैं जब हम बढ़ते जाते हैं और हमारे जीवन में फलदायी बनते हैं। आइए पढ़ें भजन संहिता 116: 12–13 ''12 यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूं? 13 मैं उद्धार का कटोरा उठा कर, यहोवा से प्रार्थना करूंगा।'' हमारे प्रभु हमसे कुछ नहीं मांगते है, वह हमसे कुछ नहीं चाहते है। वह जो चाहते है, वह हमारे 'हृदय' और हमारे होठों से 'सच्ची प्रशंसा और आराधना' चाहते है। इस प्रकार, दाऊद शास्त्र में कहता है, मेरा प्याला उमड़ रहा है, क्योंकि दाऊद कभी भी प्रभु को स्वीकार करने और उस पर प्रभु की कृपा को स्वीकार करने से कभी भी कतराता

नहीं था। एक समय ऐसा आया, जब दाऊद ने प्रभु को महिमा करते हुए नृत्य किया और उसके कपड़े भी उतर गए, लेकिन दाऊद ने नग्न नृत्य जारी रखा क्योंकि उसके नृत्य के माध्यम से दाऊद ने अकेले प्रभु को ही महिमा किया। दाऊद की पत्नी उस पर शर्मसार हुई और उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया? शास्त्र हमें बताता हैं कि दाऊद की पत्नी मीका अंत तक बांझ थी। हमें परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने में कभी भी शर्म नहीं करना चाहिए, जब हम परमेश्वर के सामने शर्मिंदा होंगे तो हमें परमपिता परमेश्वर से मिलाने में प्रभु को भी शर्म आएगी। प्रभु ने हमसे कभी कुछ नहीं मांगा, न ही हमारे धन या संपत्ति, केवल वह चाहते हैं जो हमारे दिल से एक सच्ची प्रशंसा और आराधना हो। भजन संहिता 116 : 12–13 ''12 यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूं? 13 मैं उद्धार का कटोरा उठा कर, यहोवा से प्रार्थना करूंगा।'' प्रभु हमसे कुछ भी नहीं चाहते है, हमारे पास जो कुछ भी है वह हमारे प्रभु द्वारा दिया गया है। हममें से हर एक ने, अपना उद्धार अकेले प्रभु द्वारा ही प्राप्त किया है। प्रभु ने हमें छुआ है और हमारे पापों से छुड़ाया है। इसलिए परमेश्वर को हमारी स्तुति और आराधना में बड़ाई और महिमा मिलनी चाहिए। हमें उन सभी के लिए प्रभु को धन्यवाद् करना चाहिए जो उन्होंने हमारे जीवन में किए हैं और उन सभी के लिए जो हमने अपने जीवन में किए हैं।

यह प्रभु है जिन्होंने फिरौन के दिल को कठोर कर दिया और इस तरह अपने आप को और मिस्र की भूमि में अभिशाप लाया। इसी तरह, आज भी, प्रभु परमेश्वर ने कई दिलों को कठोर किया है। परमेश्वर ने फिरौन का दिल क्यों कठोर किया, ताकि इस्राएलियों को उनके बच्चों के बच्चों को प्रभु और उनके बारे में उनकी कृपा के बारे में सिखाए। इसके अलावा, प्रभु का भय उनके दिलों में हमेशा बना रहेगा और उनका प्यार हमारे भीतर बढ़ता और बढ़ता रहेगा। निर्गमन 10: 2 ''और तुम लोग अपने बेटों और पोतों से इसका वर्णन करो कि यहोवा ने मिस्रियों को कैसे ठट्ठों में उड़ाया और अपने क्या क्या चिन्ह उनके बीच प्रगट किए हैं; जिस से तुम यह जान लोगे कि मैं यहोवा हूं।'' परमेश्वर ने फिरौन के दिल को कठोर कर दिया ताकि इस्राएलियों की पीढ़ियों को उनके जीवन में परमेश्वर के महान कार्यों का पता चल सके। प्रभु के प्रति हमारा यह प्रेम आज भी बढ़ जाता है जब हम प्रभु के इस महान कार्य को पढ़ते हैं। हम प्रभु के इस पराक्रम के कारण बलवंत और आवेशित हैं। हमें गर्व महसूस होता है कि हमारे पास आज भी वह प्रभु है जो हमारे लिए कुछ भी करेंगे। वह हमारे जीवन में सभी फिरौन को नष्ट कर देंगे और हमें विजय दिलाएंगे। इस प्रकार, परमेश्वर ने अकेले फिरौन के दिल को कठोर कर दिया, ताकि वह अपने पराक्रमी कामों को इस्राएलियों को दिखा सके। प्रभु किसी भी समय में फिरौन को नष्ट कर सकते थे, प्रभु को फिरौन को नष्ट करने के लिए समय की आवश्यकता नहीं थी। इसलिए, हमारे जीवन में भी, जिन्होंने हमारे साथ अन्याय किया है या जीवन में हमें परेशान किया है, प्रभु दुष्टों और अधर्मियों को अनुग्रह नहीं देंगे, क्योंकि यह प्रभु हैं जिन्होंने उनके दिलों को कठोर किया है। इस प्रकार, हमें अपने जीवन में प्रभु को प्रवेश करने के लिए जगह देनी चाहिए। दाऊद ने कहा है भजन संहिता 23 : 5 ''तू मेरे सताने वालों के सामने मेरे लिये मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।'' दाऊद के दुश्मन उसके अपने घर के थे, उसके पिता उसके बारे में भूल गए थे, उसके भाइयों को उससे जलन थी और वे नहीं चाहते थे कि वह इस्राएल का राजा बने। लेकिन, प्रभु ने दाऊद के घर में शमूएल को दाऊद के घर लौटने तक रोक दिया, ताकि वह दाऊद को राजा के रूप में अभिषेक कर सके। इसलिए, दाऊद उपरोक्त वचन में कहता है भजन संहिता 23: 5 ''तू मेरे सताने वालों के सामने मेरे लिये मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।'' हमें याद

रखना चाहिए, प्रभु ने हमें जीवन में कभी भी कुछ नापतोल के नहीं दिया है। प्रभु हमें अपना आशीर्वाद कैसे देते है? आइए हम पढ़ते हैं लूका 6ः 38 ''दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगाः लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।'' प्रभु हमारे आशीर्वाद को दबा दबाकर, हिला हिलाकर और उभरता हुआ देंगे। उत्पत्ति 12ः 2 ''और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा।'' प्रभु हमें आशीर्वाद देंगे ताकि हम दूसरों के लिए आशीर्वाद दे सकें, प्रभु का हाथ, उनकी कृपा, प्रेम, दया, दयालुता और करुणा हमेशा हम पर होना चाहिए। इन सबके बिना हम कुछ भी नहीं हैं।

प्रभु यह संदेश को आशीष दें। प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म।